धार्मिक विश्वास के आधार
(Foundations of Religious Belief)

प्रायः हम विश्वास को व्यक्तिगत धारणा समझते हैं परन्तु धार्मिक विश्वास व्यक्तिगत धारणा नहीं। धारणायें तो तर्कशून्य हुआ करती हैं परन्तु धार्मिक विश्वास बौद्धिक और तर्कगम्य होता है। बौद्धिक और तार्किक होने के कारण विश्वास ज्ञान का रूप ले लेता है। अतः हम कह सकते हैं कि किसी अंश में अथवा किसी दृष्टि से धार्मिक विश्वास धार्मिक ज्ञान का ही रूप है। यद्यपि यह वैज्ञानिक ज्ञान से भिन्न है परन्तु इसका सम्बन्ध ज्ञान से अवश्य है। प्रश्न यह है कि धार्मिक विश्वासों का आधार क्या है अर्थात् किन आधारों के बल पर धार्मिक विश्वास बनते हैं तथा पलते हैं? भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न आधारों का निरूपण किया है। कोई एक सर्वमान्य आधार नहीं परन्तु धर्म-दर्शन के विद्वान प्रायः स्वीकार करते हैं कि धार्मिक विश्वास के निम्नलिखित चार आधार हैं—(क) तर्क-बुद्धि; (ख) दैवीय-प्रकाशना, (ग) आस्था और (घ) रहस्यानुभूति।

(क) तर्क-बुद्धि (Reason)—धार्मिक विश्वास का सर्वप्रथम आधार तर्क-बुद्धि माना गया है। इसका कार्य व्याख्या, विवरण तथा स्पष्टीकरण है। धर्म का आधार तो धर्म-ग्रन्थ हैं। धर्म-ग्रन्थों में ईश्वर या सन्तों की वाणी संकलित होती है परन्तु यह संकलन दुर्बोध होता है, इन्हें सुबोध बनाने के लिये व्याख्या, विवरण और भाष्य की आवश्यकता होती है, उदाहरणार्थ हिन्दू धर्म का आधार तो वेद है परन्तु वेद मन्त्रों का संकलन है। इन्हें व्याख्या अथवा भाष्य के बिना नहीं समझा जा सकता। अतः प्रत्येक वेद का एक ब्राह्मण भी है। ब्राह्मण ग्रन्थों में वैदिक मन्त्रों की विस्तृत तथा सुबोध व्याख्या मिलती है। इसी प्रकार इस्लाम धर्म में कुरान तथा ईसाई धर्म में बाइबिल व्याख्या के बिना दुर्बोध हैं। अतः तर्क-बुद्धि का पहला कार्य है, दुर्बोध धर्म-ग्रन्थों को व्याख्या के माध्यम से सुबोध बनाना। इसका दूसरा कार्य रहस्यानुभूति की व्याख्या करना है। रहस्य की अनुभूति धर्म का सार है परन्तु यह अनुभूति व्यक्तिगत तथा अस्पष्ट हुआ करती है। तर्क-बुद्धि के द्वारा इन अनुभूतियों को सामान्य रूप प्रदान किया जाता है। व्यक्तिगत अनुभूति वाणी के माध्यम से प्रकाशित तथा सुस्पष्ट बनायी जाती है। वाणी का विषय होकर अनुभूति का सम्बन्ध भाषा से हो जाता है तथा भाषा में अभिव्यक्त होकर अनुभूति संज्ञानात्मक हो जाती

Scanned by TapScanner

है। इस प्रकार असंज्ञानात्मक रहस्यात्मक अनुभूति तर्क-बुद्धि के माध्यम से संज्ञानात्मक हो पाती है।

तर्क-बुद्धि की तीसरी विशेषता यह है कि इसके कारण धर्म के क्षेत्र में दुराग्रह तथा अन्ध-विश्वास का निराकरण होता है। प्रायः धर्म में विश्वास करने वाले कट्टरपंथी हो जाते हैं, उनका अपने धर्म से इतना भावनात्मक सम्बन्ध हो जाता है कि वे अपने धर्म के विरुद्ध कुछ भी सुनना नहीं चाहते तथा दूसरे धर्म की अच्छी से अच्छी बातों को भी स्वीकार करना नहीं चाहते। आग्रह और अन्धविश्वास आदि के कारण हिंसा और शोषण प्रारम्भ होता है, ऐसी स्थिति में तर्क-बुद्धि ही सहायता करती है। इसका प्रयोग कर मनुष्य धर्म के खरे और खोटे रूप को देखता है, जिसके कारण उसकी कट्टरता और उसका अन्ध-विश्वास दूर होता है। यदि हम विभिन्न धर्मों को तर्क-बुद्धि के आधार पर देखें तो बहुत से धार्मिक तर्क बिल्कुल व्यर्थ (दलील) प्रतीत होंगे।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि तर्क-बुद्धि धार्मिक विश्वास का आधार है। इस आधार को मानते हुए तीलिख आदि धर्म-दर्शन के विद्वान धर्म के क्षेत्र में तर्क-बुद्धि के प्रयोग की मान्यता देते हैं। तीलिख का कहना है कि ईसाई धर्म का इतना अधिक प्रचार और प्रसार तर्क-बुद्धि के कारण ही हुआ। ईसा मसीह के सन्देश ज्यों-ज्यों तर्क के माध्यम से स्पष्ट होने लगे, लोगों की अभिरुचि ईसाई धर्म में बढ़ने लगी, क्योंकि महात्मा ईसा के सन्देश उन्हें स्पष्टतः समझ में आने लगे। अतः तर्क-बुद्धि धार्मिक विश्वास का आधार है परन्तु सभी विद्वान् इसे नहीं स्वीकार करते। ह्यम का कहना है कि धार्मिक विश्वास का आधार आस्था है तर्क-बुद्धि नहीं। इस प्रकार विद्वानों के इस पर भिन्न-भिन्न मत हैं, परन्तु प्रायः विद्वान तर्क-बुद्धि को धार्मिक विश्वास का आधार मानते हैं।

Scanned by TapScanner